आँगनवाड़ियों की पूर्व-स्कूल शिक्षा की गुणवत्ता और प्राथमिक स्कूल शिक्षकों की समझ

सुमित अरोड़ा

कुछ महीने पहले मैं प्रारम्भिक बाल्यावस्था की देखरेख तथा शिक्षा के बारे में पढ़ रहा था। तब मेरी नजर पूर्व–स्कूल शिक्षा के लिए नीति की रूपरेखा, गुणवत्ता के मानदण्ड और पाठ्यक्रम के लिए महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा तैयार किए गए नए मसौदों पर पड़ी। बच्चे को साक्षरता और गणित के शुरुआती कौशलों को प्रदान करके उसे स्कूल के लिए तैयार करना ई.सी.सी.ई. के लक्ष्यों में से एक है। फिर मैं सोचने लगा कि हमें यह कैसे पता चलता है कि बच्चा वास्तव में स्कूल के लिए तैयार हो गया है या नहीं? इसलिए मैंने कुछ प्राथमिक स्कूल शिक्षकों से मिलने का निर्णय लिया, ताकि मैं यह समझ सकूँ कि उनके विचार में जो बच्चे आँगनवाड़ियों में भाग लेने के बाद उनके स्कूलों में आते थे, वे वास्तव में स्कूल के लिए तैयार होते थे या नहीं। यदि नहीं, तो वे आँगनवाड़ियों में गए हुए बच्चों से क्या अपेक्षा करते थे, और आँगनवाड़ियों द्वारा प्रदान की जा रही पूर्व–स्कूल शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने के लिए उनके पास क्या सुझाव थे?

शिक्षकों से लिए गए साक्षात्कारों के विवरणों में जाने से पहले, यहाँ मैं थोड़ी पृष्ठभूमि देना चाहूँगा। भारत सरकार ने 1975 में महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के अन्तर्गत बच्चों को सर्वांगीण विकास प्रदान करने के लिए तथा उनकी देख–रेख करने वालों को प्रशिक्षण देने के लिए एकीकृत बाल विकास योजना (आई.सी.डी.एस.) आरम्भ की थी। आई.सी.डी.एस. के अन्तर्गत जन्म के पूर्व से लेकर छह वर्ष तक के बच्चों को स्वास्थ्य, पोषण तथा पूर्व–स्कूल शिक्षा प्रदान करने का तथा गर्भवती और शिशुओं को दूध पिलाने वाली माताओं को स्वास्थ्य तथा पोषण प्रदान करने का एक समग्र कार्यक्रम चलाया जाता है। इसकी सेवाएँ सरकार द्वारा संचालित आँगनवाड़ियों के माध्यम से प्रदान की जाती हैं जिनमें से हरेक का प्रबन्धन एक कार्यकर्ता और एक सहायक द्वारा किया जाता है। आँगनवाड़ियों द्वारा प्रदान की जा रही सेवाओं में भोजन के अतिरिक्त पूरक पोषण, टीकाकरण, स्वास्थ्य की जाँच, चिकित्सा के लिए आगे भेजने की सिफारिशी सेवाएँ, पोषण तथा स्वास्थ्य की जाँच और पूर्व–स्कूल शिक्षा शामिल रहती हैं।

मैंने अपने शोध शिक्षक से बात की और अपने साक्षात्कार आंध्रप्रदेश के मेडक जिले में करने का निर्णय लिया। मैंने मेडक को इसलिए चुना क्योंकि अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन का एक दल पहले से वहाँ आँगनवाड़ियों के साथ काम कर रहा था और अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय का विद्यार्थी होने के कारण मुझे उनसे सहायता मिल सकती थी। अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन के दल से बातचीत करने के बाद मैंने अपनी शोध योजना को अन्तिम रूप दिया और 5 प्राथमिक स्कूल शिक्षकों के साक्षात्कार लिए। इसमें भाषा की अड़चन थी। मैं तेलगु नहीं बोलता और शिक्षक अँग्रेजी तथा हिन्दी में बहुत सहज नहीं थे। परन्तु फाउण्डेशन दल के एक सदस्य ने द्विभाषिक अनुवाद करने में सहायता की और साक्षात्कार बिना किसी रुकावट के चलते रहे। प्राप्त जानकारी को विभिन्न विषयों के अनुसार बाँटा गया है और मैंने कुछ ऐसे अध्ययनों का सन्दर्भ भी दिया है जिन्होंने समान मुद्दों की बात की है।

बच्चों का प्रदर्शन

सभी शिक्षक इस बात पर एकमत थे कि जिन बच्चों ने आँगनवाड़ियों में समय बिताया था उनके तथा जो बच्चे आँगनवाड़ियों में नहीं गए थे उनके साक्षरता तथा संख्या ज्ञान के कौशलों में कोई अन्तर नहीं था। ई.सी.सी.ई. के लिए पाठ्यक्रम का मसौदा कहता है कि आँगनवाड़ी को निश्चित रूप से बच्चों को शुरुआती साक्षरता और गणतीय कौशल प्रदान करके उन्हें स्कूल के लिए तैयार करना

चाहिए (एम.डब्ल्यू.डी., 2012)। कुछ शिक्षक तो यह कहने की हद तक गए कि जहाँ तक पूर्व–स्कूल शिक्षा का सम्बन्ध था, आँगनवाड़ियाँ बेकार थीं। राव द्वारा किए गए एक अध्ययन (2010) में, जिसमें उन्होंने आंध्रप्रदेश की 2 आँगनवाड़ियों का मूल्यांकन किया था, बताया गया कि, पश्चिम द्वारा विकसित की गई पूर्व–स्कूल शिक्षा की गुणवत्ता के अनुसार जाँचने पर, उन आँगनवाड़ियों में प्रदान की गई पूर्व–स्कूल शिक्षा की गुणवत्ता बहुत खराब थी।

परन्तु, कुछ शिक्षक इस बात से जरूर सहमत थे कि जो बच्चे आँगनवाड़ियों में गए थे उनके अंग संचालन के कौशल उन बच्चों की तुलना में बेहतर थे जो आँगनवाड़ियों में नहीं गए थे। शिक्षकों ने यह भी कहा कि उन्होंने आँगनवाड़ियों में गए हुए बच्चों को पढ़ाना ज्यादा आसान पाया क्योंकि उन्हें घर से दूर रहने की आदत हो चुकी होती थी और जब उनकी माताएँ पास में नहीं होती थीं तो वे व्याकुल नहीं होते थे। वे बच्चे गाने और नाचने में सकुचाते नहीं थे क्योंकि उन्हें आँगनवाड़ियों में इन गतिविधियों की आदत पड़ चुकी होती थी और इससे शिक्षकों का काम ज्यादा आसान हो जाता था। जैसा कि एक शिक्षक ने कहा, "जो बच्चे आँगनवाड़ियों में गए होते थे वे हेलोजन लैम्पों की तरह थे जबकि जो उनमें नहीं गए होते थे वे ट्यूब लाइटों की तरह थे।"

शिक्षकों में से किसी ने भी ऐसे बच्चों के प्रदर्शन के बारे में कोई टिप्पणी नहीं की जो निजी पूर्व–स्कूलों में गए होते थे, क्योंकि ऐसे बच्चे उसके बाद निजी स्कूलों में दाखिला लेते हैं, जबकि जिन शिक्षकों का साक्षात्कार लिया गया था वे सभी सरकारी स्कूलों में काम कर रहे थे। परन्तु उनकी धारणा थी कि निजी पूर्व–स्कूलों में गए बच्चे आँगनवाड़ियों में गए बच्चों से बेहतर प्रदर्शन करते होंगे, मुख्य रूप से इसलिए कि शुल्क वसूल करने के कारण निजी स्कूल माता–पिता के प्रति अधिक जवाबदेह होते हैं।

शिक्षकों की अपेक्षाएँ

आँगनवाड़ियों में समय बिताने के बाद प्राथमिक स्कूल आने वाले बच्चों से शिक्षकों की अपेक्षाएँ उनसे बहुत भिन्न नहीं हैं जिनका उल्लेख ई.सी.सी.ई. के पाठ्यक्रम के मसौदे में किया गया है। इनमें तेलुगु (मातृभाषा) तथा अँग्रेजी की वर्णमालाओं का ज्ञान और संख्याओं का बोध होना शामिल है। कुछ शिक्षकों ने यह भी जिक्र किया कि बच्चों में अंग संचालन के अच्छे कौशल और सुनने के कौशल भी होना चाहिए। वे यह भी मानते थे कि आँगनवाड़ियों को बच्चों में स्वच्छता की आदतें विकसित करना चाहिए और उनको तथा उनके माता–पिता को उनके नियमित रूप से स्कूल आने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। दुर्भाग्य से, ऐसे शोध का अभाव है जिसने आँगनवाड़ियों से उनके पूर्व–स्कूल शिक्षा वाले भाग के सम्बन्ध में प्राथमिक स्कूल शिक्षकों की अपेक्षाओं का दस्तावेजीकरण किया हो। पर उनके विचारों को ध्यान में लेना महत्त्वपूर्ण प्रतीत होता है, क्योंकि ई.सी.सी.ई. के उद्देश्यों में से एक बच्चों को 'स्कूल के लिए तैयार करना' है और यदि प्राथमिक स्कूल शिक्षक ऐसा नहीं सोचते कि ये बच्चे स्कूल के लिए तैयार होते हैं, तो पूर्व–स्कूल कार्यक्रम की गुणवत्ता को सुधारने पर काम किए जाने की आवश्यकता है।

पूर्व–स्कूलों के खराब प्रदर्शन के कारण

इस बात की चर्चा करने पर कि शिक्षक क्यों ऐसा सोचते थे कि आँगनवाड़ियाँ प्राथमिक स्कूल शिक्षकों की अपेक्षाओं को पूरा नहीं कर पा रहीं थीं, हर व्यक्ति ने कहा कि आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के ऊपर काम का अतिशय बोझ था और वे पूर्व–स्कूल भाग पर पर्याप्त ध्यान नहीं दे सकती थीं। आँगनवाड़ियों द्वारा प्रदान की जा रही 5 अन्य सेवाओं की अपेक्षा पूर्व–स्कूल शिक्षा को बहुत अधिक समय और प्रयास की आवश्यकता होती है, और इस कारण से अकसर इसकी उपेक्षा हो जाती है (शर्मा, सेन तथा गुलाटी, 2008)। राव (2010) भी उल्लेख करती हैं कि आँगनवाड़ी कार्यकर्ता इतने अधिक काम के बोझ से लदी रहती हैं कि उनके द्वारा आई.सी.डी.एस. के शिक्षा वाले भाग पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता। द्रेज (2006) कहते हैं कि पूर्व–स्कूल की न केवल आई.सी.डी.एस. द्वारा उपेक्षा की गई है, बल्कि शोधकर्ताओं और लेखकों ने भी खाद्य के मसलों पर ही अधिक ध्यान केन्द्रित किया है। शिक्षकों ने यह भी कहा कि आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को बहुत–सी कागजी कार्यवाही और हिसाब–किताब रखना पड़ता है जिसमें उनका बहुत–सा कीमती समय खर्च हो जाता है, और यह काम महत्त्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि जब

निरीक्षक निगरानी के लिए आते हैं तो वे सारे रिकार्डों की जाँच करते हैं। राव (2010) ने पाया कि एक आँगनवाड़ी कार्यकर्ता बच्चों के साथ काम करने में प्रतिदिन लगभग 45 मिनट व्यतीत करती है जबकि पाठ्यक्रम का मसौदा उनके लिए इस कार्य को 4 घण्टे देना जरूरी मानता है। उनका शेष समय हिसाब–किताब को बनाए रखने और अन्य प्रशासनिक कार्य में लग जाता है।

आँगनवाड़ियों में पूर्व–स्कूल के खराब प्रदर्शन के लिए जो एक अन्य कारण बताया गया वह प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा प्रदान करने के लिए आँगनवाड़ी कार्यकर्ता के प्रशिक्षण का अभाव था। सरकार आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को 26 दिनों का सेवा–पूर्व प्रशिक्षण प्रदान करती है जिसमें से केवल 4 दिन पूर्व–स्कूल शिक्षा वाले भाग के प्रशिक्षण पर खर्च किए जाते हैं (शर्मा, सेन तथा गुलाटी, 2008)। एक कार्यकारी समूह की रिपोर्ट कहती है कि वर्तमान प्रशिक्षण केन्द्र के द्वारा निर्धारित किया जाता है और इस वजह से वह क्षेत्र की जमीनी वास्तविकता से कटा हुआ होता है।

शिक्षकों ने यह भी कहा कि काम के बोझ की तुलना में आँगनवाड़ी कार्यकर्ता का वेतन बहुत कम था और यह भी उनको हतोत्साहित करने का कारण हो सकता है।

अनुशंसाएँ

चूँकि गुणवत्तापूर्ण पूर्व–स्कूल शिक्षा प्रदान करने में आँगनवाड़ियों की असफलता का सबसे बड़ा कारण काम का बोझ था, इसलिए तार्किक रूप से अनुशंसा काम के बोझ को कम करने की थी। चर्चा के दौरान कुछ सुझाव सामने आए जिनमें निम्नलिखित शामिल थे :

1. एक और आँगनवाड़ी कार्यकर्ता की नियुक्ति करना जो विशुद्ध रूप से पूर्व–स्कूल शिक्षा वाले भाग की जिम्मेदारी ले। यह वर्तमान में एक अकेली आँगनवाड़ी कार्यकर्ता के ऊपर दबाव को कम कर देगा और पूर्व–स्कूल शिक्षा की विशेष जानकारी रखने वाले प्रशिक्षक विकसित करेगा। इसका एक अन्य लाभ यह होगा कि एक आँगनवाड़ी कार्यकर्ता की अनुपस्थिति में, दूसरी जिम्मेदारी को सम्भाल सकती है। एक कार्यकारी समूह की रिपोर्ट (2008) कहती है कि दो आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं का होना नितान्त आवश्यक है, ताकि एक 3 से कम उम्र के बच्चों पर और दूसरी 3 से 6 साल की उम्र के बच्चों की पूर्व–स्कूल शिक्षा पर अपना–अपना ध्यान केन्द्रित कर सके।

2. आँगनवाड़ियों की निगरानी और निरीक्षण को बढ़ाना जिसमें हिसाब–किताब रखने पर जोर न देकर प्रदान की जा रही शिक्षा की गुणवत्ता पर ध्यान केन्द्रित हो। राव (2010) भी सुझाव देती हैं कि बच्चों के सर्वांगीण विकास का नियमित अन्तरालों पर आकलन करने के लिए कोई व्यवस्था होना चाहिए।

3. पूर्व–स्कूलों को स्कूलों के नियंत्रण के अन्तर्गत लाना या आँगनवाड़ियों को समुदाय के बीच रखने के बजाय स्कूलों में स्थित करना। दीपा सिन्हा (2006) उल्लेख करती हैं कि स्कूलों से जुड़ी आँगनवाड़ियों में उपस्थिति बेहतर होती है क्योंकि छोटे बच्चे अपने भाई–बहिनों के साथ आँगनवाड़ी केन्द्र आ जाते हैं। यह आँगनवाड़ी कार्यकर्ता को भी प्रोत्साहित करता है क्योंकि उसे एक बड़ी संस्था का हिस्सा होने का एहसास होता है।

हालाँकि इस रिपोर्ट के लिए चुने गए नमूने का आकार बहुत छोटा था, पर फिर भी यह आई.सी.डी.एस. के पूर्व–स्कूल शिक्षा वाले भाग की गुणवत्ता से सम्बन्धित समस्याओं की एक तस्वीर सामने रखती है। ऊपर उल्लेख की गई कुछ अनुशंसाओं पर समुचित विचार किया जाना चाहिए। गुणवत्ता को सुनिश्चित किए बिना केवल आई.सी.डी.एस. का सर्वत्र प्रसार करने भर से कोई उद्देश्य पूरा नहीं होगा। यदि भारत सरकार 6 साल से कम उम्र के 15 करोड़ 80 लाख बच्चों के जीवन को प्रभावित करने के बारे में गम्भीर है तो उसके लिए कुछ त्वरित कार्यवाही किए जाने की अनुशंसा की जाती है।

References

1. Sharma, A., Sharma Sen, R. and Gulati, R (2008): Early childhood development policy and programming in India: Critical issues and directions for paradigm change, Washington D.C, USA: International Journal of Early Childhood pp. 65-83
2. Rao, N. (2010): Pre-school Quality and the Development of Children From Economically Disadvantaged Families in India, Hong Kong: Taylor & Francis Group
3. Sinha, D. (2006): Rethinking ICDS: A Rights Based Perspective, India: Economic and Political Weekly (Vol. 41, No. 34) pp 3689-3694
4. Working Group on Children under Six (2007): Strategies for Children under Six, India: Economic and Political Weekly (Vol. 42, No. 52) pp 87-101
5. Dreze, J. (2006): Universalisation with Quality: ICDS in a Rights Perspective, India: Economic and Political Weekly (Vol. 41, No. 34) pp 3706-3715

सुमित अरोरा इस लेख के लिखे जाने के समय अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के एम.ए. (ऐजुकेशन) कार्यक्रम में अध्ययन कर रहे थे। इससे पहले वे प्रथम ऐजुकेशन फाउण्डेशन की प्रोग्राम रिव्यू एण्ड मैनेजमेंट टीम के सलाहकार के रूप में काम कर रहे थे। वे श्री राम कालेज ऑफ कामर्स, नई दिल्ली से स्नातक की उपाधि प्राप्त हैं। उन्होंने आरम्भ में एक पूँजी–निवेश बैंक में काम किया और उसके बाद वे टीच फॉर इण्डिया के फैलोशिप कार्यक्रम से जुड़ गए जिसमें उन्होंने मुम्बई में एक पूर्ण–कालिक सरकारी स्कूल शिक्षक की तरह कार्य किया उनकी रुचि का क्षेत्र शिक्षकों की शिक्षा तथा स्कूल नेतृत्व है। उनसे sumit.arora13@apu.edu.in पर सम्पर्क किया जा सकता है।
अनुवाद : भरत त्रिपाठी